

डॉ. रॉबर्ट सी. न्यूमैन, सिनॉट्रिक गॉस्पेल, व्याख्यान 8, गॉस्पेल शैलियाँ

© 2024 रॉबर्ट न्यूमैन और टेड हिल्डेब्रांट

ठीक है, हम यहाँ अपने सिनॉट्रिक गॉस्पेल कोर्स में हैं। हमने एक, ऐतिहासिक यीशु को देखा है; दो, नए नियम, विशेष रूप से गॉस्पेल की यहूदी पृष्ठभूमि; तीन, व्याख्या और कथात्मक शैली का परिचय, और मैथ्यू 2, विज़िटेट वाइज मेन में इसका एक नमूना। हमने खंड चार, सिनॉट्रिक्स के लेखकत्व और तिथि को देखा है, जिसमें हमने विशेषताओं, सिनॉट्रिक्स की कुछ विशेषताओं को भी देखा है, और हमने अभी खंड पाँच, शैली दृष्टांतों और उनकी व्याख्या समाप्त की है और मैथ्यू 22:1 से 14, द मैरिज बैंकेट में यीशु दृष्टांत को देखा है।

अब हम अपने पाठ्यक्रम में छठे नंबर पर आना चाहते हैं, योजना 12 विषयों में से छह, और वह है साहित्यिक कृतियों के रूप में सुसमाचार। यह इस संदर्भ में सोचना है कि, ठीक है, हम साहित्य के अध्ययन से क्या सीख सकते हैं कि सुसमाचार उस तरीके से कैसे काम करते हैं? तो, पहली बात जो हम खुद से पूछना चाहते हैं वह है सुसमाचार का साहित्यिक रूप। सुसमाचार का साहित्यिक रूप या समग्र शैली क्या है? और उस दिशा में कई अलग-अलग सुझाव दिए गए हैं।

हम यहाँ उनमें से चार पर नज़र डालने जा रहे हैं: जीवनी, प्रचार, नाटकीय इतिहास और कहानियों का संग्रह। तो यही वह दिशा है जिस पर हम जाना चाहते हैं। सबसे पहले, जीवनी।

जाहिर है, सुसमाचार यीशु के बारे में जानकारी प्रस्तुत कर रहे हैं, एक व्यक्ति जो वास्तव में इतिहास में रहता था, इसलिए वे निश्चित रूप से किसी अर्थ में जीवनी हैं। कई टिप्पणीकारों ने बताया है कि वे आधुनिक विद्वानों के अर्थ में जीवनी नहीं हैं, लेकिन उन्हें आधुनिक विद्वानों के अर्थ में जीवनी होने के लिए नहीं लिखा गया था। इसलिए, वे उस व्यक्ति द्वारा नहीं लिखे गए थे जिसे आम तौर पर अब आदर्श के रूप में देखा जाता है, अगर आप चाहें, तो एक उदासीन दृष्टिकोण वाला एक असंलग्न पर्यवेक्षक, ठीक है? हालाँकि, बहुत सी आधुनिक विद्वानों की आत्मकथाएँ भी उदासीन दृष्टिकोण वाले लोगों द्वारा नहीं लिखी जाती हैं।

अगर आप उन्हें देखें, तो उनमें से कुछ शायद प्रशंसा के पात्र हैं, लेकिन शायद ज़्यादातर, किसी को कमतर आंकने या उस पर हावी होने का एक तरीका है। वे सभी महत्वपूर्ण तिथियाँ और तथ्य देने की कोशिश नहीं कर रहे हैं, ठीक है? एक जीवनीकार से आमतौर पर यह अपेक्षा की जाती है कि वह व्यक्ति के बारे में सभी महत्वपूर्ण जानकारी देने की कोशिश करे, इसलिए वह कब पैदा हुआ और उसके बचपन के बारे में हम क्या जानते हैं और इस तरह की सभी बातें, और ऐसा नहीं लगता कि सुसमाचार लेखक ऐसा कर रहे हैं। आज की कुछ आत्मकथाएँ व्यक्तिगत यादें या चरित्र अध्ययन या उस तरह की कुछ होंगी, और सुसमाचार मुख्य रूप से उस तरह नहीं हैं।

हमें लगता है कि उनमें व्यक्तिगत यादें शामिल हैं, लेकिन वे उस तरह से संरचित नहीं हैं, इसलिए लेखक खुद को आगे नहीं लाते हैं, जैसा कि हम पहले ही उस दिशा में देख चुके हैं। हालाँकि,

सुसमाचार वास्तव में प्राचीन लोकप्रिय अर्थों में जीवनी की तरह हैं। यानी, प्राचीन काल में जीवनी कैसे लिखी जाती थी और उन्हें व्यापक दर्शकों के लिए कैसे लिखा जाता था।

इसलिए, उदाहरण के लिए, प्राचीन लोकप्रिय आत्मकथाएँ व्यावहारिक चिंताओं के साथ लिखी गई थीं और अक्सर किसी तरह के उपदेश के लिए इस्तेमाल की जाती थीं, कि लेखक का इरादा था कि आपको इस विशेष व्यक्ति की नकल करनी चाहिए, या यदि वह शायद जीवनी की एक श्रृंखला बना रहा था जिसमें अच्छे लोग और बुरे लोग थे, तो आपको एक या दूसरे उद्देश्य के लिए इस व्यक्ति की नकल करने से बचना चाहिए। प्राचीन आत्मकथाओं का उद्देश्य पाठक को ऐतिहासिक व्यक्ति से परिचित कराना था, और हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि नए नियम में बाइबिल के सुसमाचारों का उद्देश्य यही है। प्राचीन आत्मकथाओं का उद्देश्य इस व्यक्ति के कार्यों और शब्दों का कुछ विवरण देना था, शायद वह सब कुछ देने का इरादा न रखते हुए जो कहा जा सकता था, और यही नया नियम, सुसमाचार कर रहे हैं, और वास्तव में, जॉन अपने सुसमाचार के अंत में हमें स्पष्ट रूप से बताता है कि बहुत कुछ कहा जा सकता है, लेकिन यह कहा जा चुका है, और यही इसका उद्देश्य है।

इसका उद्देश्य यह है कि आप विश्वास करें कि यीशु मसीहा हैं और उनके नाम से आपको जीवन मिल सकता है। सुसमाचारों में सुकरात, यूनानी दार्शनिक एपिक्टेटस, दूसरी शताब्दी ई. और एक धार्मिक गुरु, हम कह सकते हैं कि अपोलोनियस ऑफ टियाना, जो दूसरी शताब्दी ई. के भी थे, के बारे में प्राचीन जीवनीयों से कुछ समानताएँ हैं। लेकिन सुसमाचार, इन प्राचीन लोकप्रिय जीवनीयों के विपरीत, यीशु की मृत्यु पर ध्यान केंद्रित करते हैं और वे यीशु के प्रति प्रतिक्रियाओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं, और उन क्षेत्रों में, मुझे लगता है कि वे प्राचीन लोकप्रिय जीवनीयों के रूप में असामान्य हैं, लेकिन मैं अभी भी यह कहने के लिए इच्छुक हूँ कि शैली जीवनी वास्तव में इन विशेष सुसमाचारों के लिए पुरातनता में हमारे पास सबसे करीबी चीज है।

कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि सुसमाचार प्रचार है, जिसका, ज़ाहिर है, बहुत नकारात्मक अर्थ है। पीआर के भी नकारात्मक अर्थ हैं - बिक्री की बात, प्रचार, आदि।

खैर, सुसमाचार पाठकों को यह समझाने की कोशिश कर रहे हैं कि यीशु बहुत महत्वपूर्ण हैं और उन्हें उनके प्रति उचित प्रतिक्रिया देने के लिए प्रेरित करते हैं, लेकिन उनमें बहुत सी ऐसी विशेषताएँ नहीं हैं जो अन्य कथनों, अन्य प्रकार के लेबलों से पता चलती हैं। प्रचार, जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, कुछ विचारों या दृष्टिकोणों का प्रचार करना चाहता है, लेकिन अब यह आम तौर पर एक गंदा शब्द है क्योंकि यह अक्सर सच्चाई के साथ खिलवाड़ करता है और घटनाओं को एक खास मोड़ देता है। इसमें आमतौर पर लोगों के डर या पूर्वाग्रहों पर काम करना या भावनाओं को उत्तेजित करने की कोशिश करना भी शामिल है, और दिलचस्प बात यह है कि सुसमाचारों में ऐसा कुछ भी नहीं है।

वे घटनाओं को कोई खास मोड़ देने की कोशिश नहीं करते। वे आम तौर पर आपको यह देखने देते हैं कि यीशु ने क्या कहा और उसने क्या किया, और वे बताते हैं कि अलग-अलग तरह की प्रतिक्रियाएँ होती हैं, आदि, और निस्संदेह, अगर कोई व्यक्ति पहले से ही ईसाई है, तो वह देख सकता है कि ये यीशु के प्रति बुरी प्रतिक्रियाएँ हैं और ये अच्छी प्रतिक्रियाएँ हैं, आदि, लेकिन

लेखक इस बारे में बहुत कुछ नहीं कहते। सुसमाचार लेखक पाठकों की प्रतिक्रिया आमंत्रित करने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन यह मुख्य रूप से आपकी रुचि को बढ़ाने या उनकी प्रशंसा करने की प्रतिक्रिया नहीं है, हालाँकि ये निश्चित रूप से शामिल हैं।

मुख्य रूप से, वे जो जगाने की कोशिश कर रहे हैं वह यीशु में विश्वास या भरोसे की प्रतिक्रिया है, और वे वास्तव में मुख्य रूप से ऐसा नहीं कर रहे हैं, लेकिन हम जिसे वेदी कॉल या उस तरह की किसी चीज़ के रूप में सोचते हैं, जो, निश्चित रूप से, हम कुछ में ऐसा कुछ देखेंगे, जैसे कि स्टीफन का भाषण, शायद स्टीफन का सबसे अच्छा उदाहरण नहीं, प्रेरितों के काम में पीटर का भाषण, और पॉल का भाषण है, और उस तरह की चीज़। सुसमाचार लेखक वास्तव में इस बात में आश्चर्यजनक हैं कि, एक, वे कहानी बताने में ईस्टर के बाद के अपने विश्वास को रोकते हैं, इसलिए वे पहले से ही संकेत नहीं देते हैं कि यीशु इससे पहले मृतकों में से जी उठे हैं, सिवाय इसके कि यीशु ने कुछ जगहों पर भविष्यवाणी की है, लेकिन उन्होंने मृत्यु के साथ-साथ भविष्यवाणी की है और शिष्य वास्तव में उस पूरे पैकेज को सुनने के लिए तैयार नहीं हैं। और उन्होंने सुसमाचार के माध्यम से बार-बार मूल्यांकनात्मक टिप्पणियाँ देने के बजाय यीशु के मंत्रालय की घटनाओं को अपनी कहानी बताने दिया।

कभी-कभी, आपके पास मूल्यांकनात्मक टिप्पणी होती है, लेकिन उनमें से बहुत ज़्यादा नहीं हैं। तो हाँ, सुसमाचार यीशु में विश्वास का प्रचार करने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन वे इसे उस तरह से नहीं कर रहे हैं जैसा हम प्रचार के बारे में सोचते हैं। सुसमाचार के साहित्यिक रूप के लिए तीसरा सुझाव नाटकीय इतिहास है।

और हाँ, सुसमाचार यीशु के व्यक्तित्व, कार्यों और प्रभाव की एक नाटकीय कहानी बता रहे हैं, जो इतिहास में एक वास्तविक व्यक्ति हैं, और वे कुछ मायनों में नाटकों की तरह दिखते हैं, नाटकीय इतिहास में नाटकीय, बजाय आधुनिक आख्यानों की तरह। पेंसिल्वेनिया विश्वविद्यालय के एक साहित्यिक आलोचक रोलांड फ्राई का मानना है कि सुसमाचारों को नाटकीय इतिहास के रूप में वर्गीकृत किया जाना चाहिए, और वे सुसमाचारों की तुलना विलियम शेक्सपियर के ऐतिहासिक नाटकों से करते हैं, जिनके पास निश्चित रूप से कई नाटकीय इतिहास हैं, और जॉर्ज बर्नार्ड शॉ के नाटक, विशेष रूप से सेंट जोन से। खैर, नाटकीय इतिहास की विशेषताएँ क्या हैं? फ्राई कहते हैं, खैर, मूल रूप से एक नाटकीय इतिहास अनिवार्य रूप से घटनाओं का एक निष्पक्ष प्रतिनिधित्व है, इसलिए यह ऐसा कुछ नहीं है जिसके बारे में हमारे पास बहुत सारे आविष्कार हैं। यह आपको बताता है कि क्या हुआ।

एक नाटकीय इतिहास एक व्यापक सामान्य दर्शकों के लिए निर्देशित होता है, इसलिए यदि आप चाहें तो इसका उद्देश्य उन्हें शामिल करना है, लेकिन एक नाटकीय इतिहास को थोड़े से स्थान में बहुत सी बातें कवर करने की आवश्यकता होती है, और इसलिए ध्यान आकर्षित करने, ध्यान बनाए रखने आदि के लिए संक्षेपण बहुत महत्वपूर्ण है। और मुझे लगता है कि यह सुसमाचारों में भी महत्वपूर्ण है, आंशिक रूप से, मुझे संदेह है, इसी कारण से, और आंशिक रूप से शायद इसलिए कि प्राचीन काल में पुस्तकें महंगी थीं, और इसलिए यद्यपि जोसेफस, आप जानते हैं, अपने यहूदियों के इतिहास के लिए सात खंडों का उपयोग करता है, क्षमा करें, अपने यहूदियों के युद्ध, यहूदी युद्ध, और अपने पुरावशेषों के लिए 20 खंड, और वे खंड मानक पपीरस रोल के

आकार के आसपास होंगे, वह एक संपन्न दर्शकों के लिए लिख रहा है, और ईसाई धर्म एक व्यापक दर्शकों के लिए लक्षित है, जिसमें वे लोग शामिल हैं जो इस तरह की चीजों को वहन करने में सक्षम नहीं होंगे, इसलिए औसत व्यक्ति, मुझे लगता है, अगर वे इसके लिए पैसा लगाना चाहते हैं, तो एक या दो खंड, उस तरह की चीजें खरीद सकते हैं, इसलिए आम तौर पर सुसमाचारों को डिज़ाइन किया गया है इस तरह से। इसलिए, संक्षेपण महत्वपूर्ण है, और इसका एक हिस्सा, मुझे लगता है, उपस्थिति को आकर्षित करता है और बनाए रखता है, और इसका एक हिस्सा इन वित्तीय कारणों से है।

नाटकीय इतिहास में मुख्य अभ्यास प्रतिनिधि या नमूना व्यक्तियों का उपयोग करना है, इसलिए इस व्यक्ति ने सभी प्रकार के लोगों के साथ बातचीत की, विभिन्न प्रकार के कुछ नमूने चुनें, ठीक है, इसलिए नमूना अनुयायी, नमूना विरोधी, उस तरह की चीज़, प्रतिनिधि या नमूना घटनाओं का उपयोग करने के लिए, आप व्यक्ति के जीवन को कवर कर रहे हैं, लेकिन आप जीवन के विवरण को कवर नहीं कर सकते, यह बहुत जटिल है, लेकिन फिर इन प्रतिनिधि व्यक्तियों, घटनाओं और कार्यों का उद्देश्य, उस व्यक्ति के कार्य जिसका आप इतिहास दे रहे हैं, लंबाई को सीमाओं के भीतर रखते हुए एक सटीक चित्र देना है, और मुझे लगता है कि, फिर से, यह सुसमाचारों के साथ बहुत अच्छी तरह से फिट बैठता है। चौथा सुझाव है, क्या वे संग्रह हैं, शैली है, यदि आप चाहें, तो कहानियों का संग्रह, ठीक है, आप पूरे इतिहास में ऐसी जगहें पा सकते हैं जहाँ आपके पास एक या दूसरे प्रकार की कहानियों का संग्रह है, आप जानते हैं, रॉबिन हुड के बारे में कहानियाँ, या जॉर्ज वाशिंगटन के बारे में कहानियाँ, या अब्राहम लिंकन के बारे में कहानियाँ, आदि, और इनमें से कुछ संभवतः पौराणिक हैं, इनमें से कुछ वास्तव में ऐतिहासिक हैं, लेकिन वे ऐसी चीज़ों का संग्रह हैं जो ऐसा करती हैं। खैर, आधुनिक जीवनियों के विपरीत सुसमाचार की पुस्तकें कहानियों, अर्थात् यीशु की घटनाओं, भाषणों और कथनों का संग्रह होने के कारण सबसे अधिक प्रभावशाली हैं, और यह सुसमाचारों को इस तरह से कार्य करने की अनुमति देता है कि एक जीवनी, विशेष रूप से वह जो व्यक्ति के जीवन को एकरूपता से कवर करने का प्रयास करती है, वह इतना अच्छा कार्य नहीं कर सकती।

उदाहरण के लिए, कहानियों के संग्रह का उपयोग करके सही कहानियों और इस तरह के चयन के साथ जीवनी तैयार करके, आप जीवनी को अन्यथा की तुलना में बहुत अधिक एक्शन से भरपूर बना सकते हैं। इसलिए, आप कई संक्षिप्त कहानियों का उपयोग करते हैं, जो एक एकल जुड़ी हुई कथा की तुलना में अधिक एक्शन की अनुमति देता है, जहाँ आप सब कुछ का अनुसरण करने की कोशिश कर रहे हैं। सुसमाचारों में ऐसे स्थान हैं जहाँ आपके पास एक या दो दिन के लिए एक एकल जुड़ी हुई कथा है, लेकिन आमतौर पर इससे अधिक लंबी नहीं होती है।

प्रत्येक सुसमाचार का प्रतिनिधित्व करने वाली कहानियों के ये संग्रह यीशु पर केंद्रित हैं, इसलिए आप उनके व्यक्तित्व और कार्य को देखते हैं, और आप जो कुछ उन्होंने किया है, उसकी व्याख्या करते हैं और उसका जश्न मनाते हैं। वास्तव में इसमें न तो बहुत कुछ समझाया गया है और न ही जश्न मनाया गया है। यह, फिर से, यह अधिक मूल्यांकन वाली चीज़ है, और यह बहुत ज़्यादा नहीं है। आप कहानियों के संग्रह की तुलना में कथा का उपयोग करके यीशु के कार्यों, यीशु के शब्दों और उनके प्रति दूसरों की प्रतिक्रिया को आसानी से दिखा सकते हैं, और आप वास्तव में सुसमाचारों में कई उपाख्यानों के साथ देख सकते हैं कि उनमें से कुछ उन कार्यों पर ध्यान

केंद्रित करते हैं और कुछ उन शब्दों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, और उनमें से कुछ का मुख्य विषय उनके प्रति विभिन्न प्रकार की प्रतिक्रियाएँ हैं, इस तरह की चीज़ें।

कहानियों के संग्रह का उपयोग करने से आप विभिन्न सामग्रियों का उपयोग भी कर सकते हैं। ऐसे कई लोग हैं जो सोचते हैं कि इन कहानियों को संकलित किए जाने से पहले स्वतंत्र रूप से इस्तेमाल किया गया था। मंच के आलोचकों का कहना है कि ये सामग्रियाँ स्वतंत्र रूप से प्रसारित हुईं, और मुझे लगता है कि शायद कुछ अर्थों में यह सच है, लेकिन मैं सुझाव दूंगा कि प्रेरितों और अन्य प्रत्यक्षदर्शियों द्वारा इनका स्वतंत्र रूप से उपयोग किया गया था क्योंकि वे अलग-अलग उपाख्यानो के रूप में एक स्थान से दूसरे स्थान पर गए थे, लेकिन वे जानते थे कि वे एक साथ कैसे चलते हैं और यह जानकारी कभी खोई नहीं थी।

हमें संक्षिप्त आख्यानों की विभिन्न श्रेणियाँ मिलती हैं, और आपको ऊपर रिकेन की सूची याद होगी, जहाँ हमने सभी विभिन्न प्रकार की आख्यानों को देखा: मुठभेड़ आख्यान, जुनून आख्यान, जन्म आख्यान, विवाद आख्यान, और उस तरह की चीज़ें। कहानियों के संग्रह का उपयोग करने से आप उनमें से कुछ में घटनाओं का रेखाचित्र बना सकते हैं और अन्य में किसी विशेष घटना का विवरण दे सकते हैं और आपको संवादों के साथ-साथ प्रवचन भी करने की अनुमति देता है जहाँ सिर्फ़ यीशु बोल रहे हैं, साथ ही उस तरह की चीज़ें भी। इसी तरह, जिस तरह से सुसमाचारों को एक साथ रखा गया है, आपके पास यीशु के शब्द हैं, और उनमें से कुछ सिर्फ़ संक्षिप्त कथन हैं, लगभग साउंडबाइट्स, अंधा अंधे का नेतृत्व करता है, कैसर को वह देता है जो कैसर का है और ईश्वर को वह जो ईश्वर का है, और अन्य विस्तारित प्रवचन हैं जैसे कि पर्वत पर उपदेश या जैतून का प्रवचन, और फिर अन्य दृष्टांत रूप लेते हैं, और इसलिए यह आपको बहुत विविधता प्राप्त करने और यीशु के बारे में कुछ अलग दृष्टिकोण देखने की अनुमति देता है कि वह कैसा था, और उसने क्या सिखाया, और वह क्या कर रहा था।

तो, यह शैली की एक छोटी सी चर्चा है। इस पर आकर और चीज़ों को एक साथ लाने की कोशिश करते हुए, मैं कहूंगा कि सुसमाचार मूल रूप से आत्मकथाएँ हैं। वे शायद प्राचीन आत्मकथाओं की तुलना में थोड़ा अलग तरीके से काम करते हैं, इस तरह की कहानी को व्यक्तिगत घटना के रूप में पेश करते हैं, इसलिए आप प्राचीन आत्मकथाओं में कुछ ऐसा ही देखेंगे, और वे लोगों को यीशु पर विश्वास दिलाने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन अन्यथा वे सामान्य प्रकार की चीज़ों से दूर रहते हैं जो हम प्रचार में देखते हैं, लेकिन वे कुछ मायनों में एक नाटकीय इतिहास से मिलते जुलते हैं जहाँ आप एक व्यक्ति को थोड़े समय में यह समझने की अनुमति देते हैं कि यीशु के आने और इस तरह की घटनाओं में क्या हो रहा है।

हम सुसमाचार में इस्तेमाल की गई तकनीकों के बारे में थोड़ा सोचते हैं, और मैं आपको यहाँ तकनीकों की एक श्रृंखला देने जा रहा हूँ। मुझे देखना है कि यह कितनी बड़ी है, मेरा अनुमान है कि सिर्फ़ छह। सबसे पहले, हम देखते हैं कि सुसमाचार लेखकों की तकनीकों में से एक संयम और निष्पक्षता है।

सुसमाचार की पुस्तकें असामान्य हैं और यहां तक कि अधिकांश प्राचीन जीवनियों से भी अलग हैं, क्योंकि लेखकों ने यीशु को बोलने दिया है। वे पाठक को समझाने या प्रभावित करने की

कोशिश नहीं करते हैं, जिसे हम मूल्यांकनात्मक टिप्पणियाँ कहते हैं। इस दिशा में वे केवल एक ही काम करते हैं, इस दिशा में वे केवल एक ही तकनीक का उपयोग करते हैं, वह है घटना का चयन।

इसलिए, कुछ घटनाओं पर ज़ोर देकर और अन्य पर नहीं, वे आपका ध्यान इस ओर आकर्षित कर सकते हैं कि यीशु ने क्या दावा किया और लोगों ने इस पर कैसी प्रतिक्रिया व्यक्त की। दूसरे, हमारे पास संक्षिप्त संक्षिप्त विवरण हैं। विशेष रूप से सिनॉट्रिक गॉस्पेल में, जो जॉन के गॉस्पेल के विपरीत भी है, अधिकांश घटनाएँ एकल दृश्य हैं जिनमें कुछ अभिनेता हैं, अक्सर एक समूह एक इकाई के रूप में कार्य करता है।

अगर आप चाहें तो कहानी सुनाने की यही विशेषताएँ हैं, और उन्हें शब्दों के बहुत ही किफायती इस्तेमाल के साथ बताया जाता है। जॉन के सुसमाचार में कम विवरण के साथ काम करने की प्रवृत्ति है, लेकिन लंबे, अधिक विस्तृत विवरण और उस तरह की तकनीक का कम इस्तेमाल किया गया है। तीसरा, संयम और वस्तुनिष्ठता और संक्षिप्त संकुचित विवरणों के अलावा, कथन बहुत ठोस है।

संक्षिप्त विवरण बहुत आसानी से नीरस हो सकते हैं यदि वे सामान्य सारांश हैं, और यदि आप कहते हैं, ठीक है, यीशु ने युग के अंत पर कुछ समय के लिए बात की या ऐसा कुछ, आप जानते हैं, आप एक तरह से, आप नहीं, आप कुछ कह रहे हैं, लेकिन आप बहुत कुछ नहीं बता रहे हैं। इस खतरे को संक्षिप्त, विशद विवरणों का उपयोग करके विशिष्ट घटनाओं की प्रस्तुति से टाला जा सकता है, एक कलाकार के स्केच की तरह, जहां एक कलाकार, आप क्या कहेंगे, केवल 20 पंक्तियों या उससे कम के साथ एक व्यक्ति की उपस्थिति दे सकता है, जबकि, आप जानते हैं, यदि आप इसका एक ग्राफिक बनाने की कोशिश कर रहे थे, तो आपको एक हजार पिक्सेल या कुछ और की आवश्यकता हो सकती है, लेकिन एक ऐसी तकनीक जो आपको वह प्राप्त करने की अनुमति देती है। इसलिए, सुसमाचार लेखक विशिष्ट घटनाओं, संक्षिप्त, विशद विवरणों और प्रत्यक्ष प्रवचन का उपयोग करते हैं।

ठीक है, व्यक्ति बोलता है, विरोधी या उपचार या कुछ और चाहने वाला व्यक्ति बोलता है, आदि, लेखक को यह बताने में कुछ समय बिताने के बजाय कि वह कौन है। कभी-कभी, वह ऐसा करता है, इसलिए हमें गुफाओं में रहने वाले राक्षसी व्यक्ति का थोड़ा सा चरित्र चित्रण मिलता है, आदि, और इस तरह की चीजें, लेकिन ऐसा बहुत अधिक नहीं। चरित्र चित्रण अक्सर उस विशेष घटना में अभिनेता के शब्दों और कार्यों द्वारा प्रदान किया जाता है, न कि सुसमाचार लेखक के विशिष्ट कथनों द्वारा।

चौथी तकनीक है सामग्री का चयन। लेखकों के पास स्पष्ट रूप से घटनाओं की एक विस्तृत श्रृंखला होती है, जिसमें से वे चुन सकते थे, और वे उन घटनाओं को चुनते हैं जिन्हें वे फिर से बताने जा रहे हैं, और फिर वे सोचते हैं कि वे इसका उपयोग कैसे करेंगे। इसलिए, वास्तव में मूल्यांकनात्मक शब्दों का उपयोग किए बिना, लेखक किसी विशेष घटना या उस घटना में किसी विशेष वस्तु को समर्पित स्थान की मात्रा के आधार पर अपना जोर व्यक्त कर सकता है, चाहे वह

संवाद या किसी प्रकार के सारांश कथन का उपयोग करना चुनता हो, और वह पाठक के मन में क्या अपेक्षाएँ जगाता है।

तो, सामग्री का चयन। आपको याद होगा, फिर से, जॉन हमें बताता है कि यीशु ने इन सभी प्रकार की चीज़ों को किया, लेकिन इन्हें चुना गया है, चुना गया है, आदि, ताकि आप जान सकें। पाँचवीं तकनीक विविधता है।

लेखक अपनी सामग्री को कई तरह से समूहीकृत करता है, कभी-कभी यीशु के कार्यों को उसके शब्दों के साथ, चमत्कारों को विवाद के साथ, अनुयायियों को विरोधियों के साथ बदलता है, और इससे पाठक का ध्यान बनाए रखने में मदद मिलती है, या अगर इसे ज़ोर से पढ़ा जाए, तो श्रोताओं का ध्यान बनाए रखने में मदद मिलती है। छठी तकनीक नमूनाकरण है। सुसमाचार लेखक स्पष्ट रूप से हमें यीशु के भाषण और कार्यों के नमूने देते हैं, बजाय इसके कि वे पूरी रिपोर्ट देने की कोशिश करें।

ये आम तौर पर यीशु द्वारा किए गए चमत्कारों के प्रकार, उनके द्वारा किए गए विभिन्न प्रकार के लोगों, उनके द्वारा सामना किए गए विरोधों और विभिन्न अवसरों पर दिए गए भाषणों के नमूने हैं। तो यहाँ कुछ तकनीकें हैं, और इनमें से बहुत कुछ लेलैंड राइकेन से जुड़ी हैं, संयम और निष्पक्षता, संक्षिप्त संक्षिप्त विवरण, बहुत ठोस वर्णन, सामग्री का चयन, विविधता और नमूनाकरण। हम यीशु के भाषणों के बारे में कुछ शब्द देखते हैं।

यीशु के भाषण की कुछ खास विशेषताएं जो सुसमाचारों में दिखाई देती हैं। मुझे लगता है कि राइकेन ने फिर से कहा है कि यीशु के भाषणों की विशेषता यह है कि वे सूत्रात्मक, काव्यात्मक, पैटर्नयुक्त, विध्वंसक, शैलियों का मिश्रण और संरचित हैं। आइए हम उन पर जल्दी से नज़र डालें और उनके बारे में थोड़ा सोचें।

सूत्र, ठीक है, मैं इस शब्द से परिचित नहीं हो सकता, लेकिन अगर आप चाहें तो इसका मतलब संक्षिप्त है। यीशु के शब्द आम तौर पर संक्षिप्त होते हैं, लगभग आधुनिक साउंडबाइट्स की तरह। यह बात मुझे प्रभावित करती है, मैंने एक बार साउंडबाइट धर्मशास्त्र पर एक व्याख्यान दिया था, कि कैसे यीशु एकल वाक्यों में महत्वपूर्ण धार्मिक बातें व्यक्त करने में सक्षम थे, आदि।

यीशु के शब्द आम तौर पर संक्षिप्त होते हैं, लगभग आधुनिक साउंडबाइट्स की तरह, लेकिन यीशु के शब्दों को संरचना और शब्दों के खेल से यादगार बनाया जाता है। आज आपको टीवी न्यूज़ या इस तरह की कोई चीज़ देखने में बहुत सारे साउंडबाइट्स मिलते हैं, लेकिन उनमें से बहुत से आप उनके कहे जाने के एक दिन बाद ही भूल जाते हैं, लेकिन संरचना का उपयोग करने की यीशु की तकनीक, इसलिए आपको समानता और इस तरह की कई चीज़ें मिलती हैं, अतिशयोक्ति और इस तरह की चीज़ें, और साथ ही किसी तरह का शब्द खेल, हमें यीशु की कुछ बातों को याद रखने की अनुमति देता है। यीशु के शब्द अक्सर कहावत जैसे होते हैं: न्याय न करें, या आपको भी न्याय दिया जाएगा।

यदि अंधा अंधे को मार्ग दिखाए, तो दोनों खाई में गिरेंगे। यीशु का भाषण काव्यात्मक है। याद रखें कि हिब्रू कविता तुकबंदी नहीं है, और यदि यह मीट्रिक होती, तो हमें मीट्रिक के बारे में अच्छी जानकारी नहीं होती, लेकिन यीशु अक्सर हिब्रू समानांतरता का उपयोग करते हैं।

वह ठोस छवियों का उपयोग करता है, और इस तरह की कल्पना, कुछ बहुत ही विशिष्ट न कि कुछ बहुत ही अमूर्त, कविता की विशेषता है। वह रूपक, उपमा, विरोधाभास और अतिशयोक्ति का उपयोग करता है। एक अमीर आदमी के लिए स्वर्ग में प्रवेश करने की तुलना में एक ऊंट के लिए सुई की छेद से गुजरना आसान है।

अगर आप चाहें तो यह आपके दिमाग में बस जाएगा। यीशु का भाषण पैटर्न वाला है, जिसमें बहुत सारी पुनरावृत्तियाँ हैं। आपने सुना होगा कि यह कहा गया था, लेकिन मैं आपसे कहता हूँ, वह इसे लगभग पाँच बार इस्तेमाल करता है, यह बताने के लिए कि असली धार्मिकता क्या है, जो कि हम नकली धार्मिकता या सस्ती कृपा या उस तरह की कोई चीज़ कह सकते हैं।

वह पंक्तियों के बीच संतुलन बनाता है, और यह फिर से किसी तरह की समानता पर वापस आता है। यहाँ दोहराव और संतुलन का उदाहरण है। माँगें और यह आपको दिया जाएगा। खोजो, और तुम पाओगे। खटखटाओ और तुम्हारे लिए दरवाज़ा खोला जाएगा।

पाँचवीं विशेषता, फिर से, जिसे राइट जीसस के भाषण में सुन सकते हैं वह विध्वंसक है और कुछ लोगों ने इसका असंतोषजनक तरीके से उपयोग किया है, लेकिन जीसस हमारे रोज़मर्रा के सोचने के तरीके पर हमला करते हैं।

वह हमारे पारंपरिक मूल्यों को कमज़ोर करता है। यीशु बाइबल के वास्तविक मूल्यों को कमज़ोर नहीं करता, लेकिन वह अक्सर उन तरीकों को कमज़ोर करता है, जिनसे उन्हें कमज़ोर किया जाता है या कमज़ोर किया जाता है या इस तरह की अन्य चीज़ें उन लोगों के बीच होती हैं जो सिर्फ़ पारंपरिक रूप से धार्मिक हैं। उदाहरण के लिए, बीटिट्यूड्स को ही लें, जो हमारे रोज़मर्रा के सोचने के तरीके को कमज़ोर करता है।

धन्य हैं वे जो गरीब हैं। आम तौर पर कौन सोचता है कि गरीब लोग धन्य हैं? निश्चित रूप से यह सोचने का एक मानक तरीका नहीं है। धन्य हैं वे जो शोक मनाते हैं।

हम आम तौर पर उन लोगों से दूर रहने की कोशिश करते हैं जो शोक मनाते हैं। धन्य हैं वे जो नम्र हैं, आदि, और किंग जेम्स संस्करण, नम्र, आदि, और आत्म-पुष्टि के युग में, नम्रता आम तौर पर बहुत दूर तक नहीं जाती है। और फिर भी यीशु कहते हैं कि यह आत्मा में गरीब है जिसके पास स्वर्ग का राज्य है यदि आप चाहें, तो जो लोग शोक करते हैं उन्हें एक दिन सांत्वना मिलेगी।

जो लोग विनम्र हैं, वे पृथ्वी के वारिस होंगे, शक्तिशाली नहीं, और जो लोग दृढ़ निश्चयी हैं और ऐसे ही लोग पृथ्वी के वारिस होंगे। इसलिए जिस तरह से समाज आगे बढ़ने के बारे में सोचता है, चाहे वह आधुनिक समाज हो या प्राचीन समाज, अगर आप चाहें तो इन विशेष चीज़ों से कमजोर हो जाता है। यीशु अक्सर अपने भाषणों में कई अलग-अलग शैलियों को एक साथ लाते हैं।

उदाहरण के लिए, राइकेन सुझाव देते हैं कि पर्वत पर उपदेश की शुरुआत आशीर्वाद, धन्य कथनों और ठीक है से होती है, जो कुछ भजनों की विशेषता है। शुरुआत में उनमें से नौ हैं। फिर, वह कुछ चरित्र रेखाचित्र देता है।

याद रखें कि पाखंडियों का उपवास, अगर आप चाहें तो, एक छोटे से चरित्र चित्रण का एक अच्छा उदाहरण है। वह एक कथावत का उपयोग करता है: न्याय न करें, अन्यथा आप पर भी न्याय किया जाएगा। वह व्यंग्य का उपयोग करता है, खराब दृष्टि के साथ आँख की सर्जरी करने का विचार, आँख में लट्टा वाला आदमी, आदि।

वह गीत-प्रकार की चीजों का उपयोग करता है: तुम दुनिया की रोशनी हो, दृष्टांत, बुद्धिमान और मूर्ख निर्माता, प्रार्थना, और प्रभु की प्रार्थना। इसलिए, हम एक बहुत ही छोटे भाषण में कई शैलियों को एक साथ लाते हुए देखते हैं, जो आजकल के पादरी और ऐसे लोगों द्वारा दिए जाने वाले उपदेशों और इस तरह के लिए बहुत ही असामान्य होगा। राइकेन कहते हैं कि उपदेश समग्र रूप से काल्पनिक साहित्य है।

धरती पर ऐसा कोई समाज नहीं है, हालाँकि मुझे लगता है कि यीशु का इशारा यही है कि मेरे अनुयायियों को ऐसा समाज बनाने की कोशिश करनी चाहिए। यह एक उद्घाटन भाषण है, इसलिए इसे ऐसे ही कहा जा सकता है। यीशु यह रेखांकित कर रहे हैं कि वह अपने राज्य को कैसा बनाना चाहते हैं और राजा के रूप में वह उस दिशा में आगे बढ़ने के लिए क्या करने जा रहे हैं।

और माउंट पर उपदेश ज्ञान साहित्य है। इसमें कई संरचनाएं हैं जो उस दिशा में जाती हैं। अंत में, राइकेन सुझाव देते हैं कि यीशु के भाषण संरचित हैं, और वे कहते हैं कि वे सरल हैं; वे बहुत कलात्मक हैं।

ड्यूक में ओल्ड एंड न्यू टेस्टामेंट हिस्ट्री और फिर पेन में कोर्स करते हुए मुझे व्यक्तिगत रूप से यह बात बहुत प्रभावित करती है, और कुछ चीजें, जिनमें से एक यीशु के बारे में थी, जिससे आपको यह विचार मिलता है, ठीक है, एक उदारवादी स्थिति अक्सर यह होती है कि मैथ्यू या जो भी मैथ्यू के सुसमाचार का संकलनकर्ता था, उसके पास यीशु के बारे में बहुत सारी बातें थीं और उसने उन्हें एक साथ ठूस दिया, आदि। लेकिन मुझे लगा, नहीं, वे बहुत संगठित हैं। उनके संगठन में एक प्रतिभा है, उनकी सामग्री में एक प्रतिभा है, आदि।

और इसलिए, हम यीशु की जगह, जो सबसे संभावित उम्मीदवार हैं, पहली सदी में आरंभिक चर्च के इतिहास में कुछ अज्ञात प्रतिभाओं को लाने जा रहे हैं। अत्यधिक कलात्मक, एकल विषय या तीन गुना उदाहरण अक्सर यीशु के भाषणों की संरचना का हिस्सा होते हैं, यदि आप चाहें तो। और यहाँ राइकेन ने वर्ड्स ऑफ़ लाइफ़, पृष्ठ 120 में क्या कहा है।

डिज़ाइन की कलात्मकता स्पष्ट है। ऐसा कोई कारण नहीं है कि उपदेश जैसा कि यह है, बिल्कुल वैसा ही न हो जैसा यीशु के लंबे उपदेशों का था। इसलिए, मुझे लगता है कि उनकी प्रतिक्रिया भी कुछ ऐसी ही है।

खैर, यहाँ एक संदर्भ है क्योंकि हम इस खंड को समाप्त कर रहे हैं, और फिर से, साहित्यिक कार्यों के रूप में सुसमाचारों पर और अधिक कहा जा सकता है, लेकिन लेलैंड राइकेन ने इस काम का अधिकांश हिस्सा एक इंजीलवादी दृष्टिकोण से किया है। उनके वर्ड्स ऑफ लाइफ को देखें, जो न्यू टेस्टामेंट का एक साहित्यिक परिचय है, जिसे वर्ड्स ऑफ डिलाइट में पूरी बाइबल में विस्तारित किया गया था। तो इसमें एक पुराना नियम खंड है, और फिर इस वर्ड ऑफ लाइफ को इसमें शामिल किया गया।

राइकेन इंटरवर्सिटी प्रेस के संदर्भ कार्य डिक्शनरी ऑफ बाइबिलिकल इमेजरी के प्रमुख संपादकों में से एक थे, जिसमें कुछ बहुत ही उपयोगी सामग्री भी है। ठीक है, मुझे लगता है कि आज हम जो कोशिश करना चाहते थे, वह खत्म हो गई है। तो अब हमने अपने सिनॉट्रिक गॉस्पेल कोर्स के 12 में से छह खंडों पर काम कर लिया है, और हमें छह और खंड पढ़ने हैं।

मैं यहाँ आपके लिए उनका संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कर दूँगा, और फिर हम समाप्त करेंगे। हम पहले ही ऐतिहासिक यीशु, यहूदी पृष्ठभूमि, व्याख्या और कथा शैली का परिचय, लेखकत्व, तिथि, चरित्र चित्रण सहित सिनॉट्रिक्स, दृष्टान्तों की व्याख्या, और साहित्यिक कृतियों के रूप में सुसमाचारों पर विचार कर चुके हैं। यहाँ भविष्य में, भगवान की इच्छा से, हम सिनॉट्रिक समस्या पर विचार करना चाहते हैं, मैथ्यू, मार्क और ल्यूक के बीच क्या संबंध है, फिलिस्तीन और यरुशलम का भूगोल, चमत्कारों के विवरण की शैली और उनकी व्याख्या कैसे की जाए, सिनॉट्रिक्स का धर्मशास्त्र, सिनॉट्रिक्स के बाइबिल धर्मशास्त्र के बारे में सोचना, सिनॉट्रिक्स अपने धर्मशास्त्र की संरचना कैसे करते हैं, किस तरह की शब्दावली का उपयोग करना है, उनका जोर क्या है, यदि आप चाहें, और फिर विवाद विवरणों की व्याख्या कैसे करें, और फिर अंत में, हम रूप आलोचना और संपादन आलोचना के साथ समाप्त करेंगे।

ठीक है आपको बहुत धन्यवाद।